श्री राम

श्रद्धा और चमत्कार की कथाएं

अनुसूची

अध्याय/विषय	पृष्ठ
अध्याय 1: हृदय में सीता–राम	2
अध्याय 2: गिलहरी की कहानी	5
अध्याय 3: भगवान राम की बहन शांता	8
अध्याय 4: हनुमान जी को बजरंगबली क्यों	11
अध्याय 5: रावण के दस सिर	14
अध्याय 6: सीता और मंदोदरी की कहानी	17
अध्याय 7: हनुमान जी का जन्म सीन:	21
अध्याय 8: शूर्पणखा की कहानी	24
अध्याय 9: कुंभकर्ण की नींद का रहस्य	28

हृदय में सीता–राम

श्री राम (मुस्कुराते हुए):
हनुमान, तुमने मेरे लिए जो किया, उसे मैं कभी नहीं चुका सकता। तुम मुझसे बताओ, तुम्हें क्या उपहार चाहिए?
हनुमान (विनम्रता से हाथ जोड़ते हुए):
प्रभु, मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। मेरा जीवन तो केवल आपकी सेवा के लिए है।
सीता माता (प्रसन्न होकर):
हनुमान, तुम्हारी भक्ति और निष्ठा अतुलनीय है। यह लो, यह मोतियों की माला तुम्हारे लिए।
(हनुमान जी माला को स्वीकार कर दरबार के कोने में जाकर बैठ जाते हैं और हर मोती को दाँत से तोड़ने लगते हैं।)

सीता माता (आश्चर्य से):

हनुमान, तुम यह क्या कर रहे हो? माला के मोतियों को क्यों तोड़ रहे हो?

हनुमान (सरलता से):

माता, मैं देख रहा हूँ कि इनमें श्री राम हैं या नहीं। अगर इनमें राम नहीं हैं, तो मेरे लिए इनका कोई मूल्य नहीं।

(सभा में बैठे सभी लोग यह सुनकर हंसने लगते हैं।)

एक दरबारी (मजाक में):

हनुमान, अगर तुम्हारे शरीर में भी राम का वास हो, तो?

हनुमान (गंभीरता से):

तब प्रमाण दिखाना मेरा कर्तव्य

(हनुमान जोर से "जय श्री राम" कहते हैं और अपने हाथों से अपना सीना चीर देते हैं। सब लोग आश्चर्यचकित होकर देखते हैं कि उनके हृदय में सिया-राम की छवि स्पष्ट दिखाई दे रही है।)

श्री राम (आंखों में आंसू भरकर):

हनुमान, तुम्हारी भक्ति अमूल्य है। तुमने फिर से दिखा दिया कि तुम्हारा हर श्वास, हर धड़कन मेरे नाम से जुड़ी है।

सीता माता (ममता से):

हनुमान, तुम्हारे जैसा भक्त न कभी हुआ है, न कभी होगा।

(सभी लोग हनुमान की भक्ति देखकर स्तब्ध रह जाते हैं और उनके प्रति नतमस्तक हो जाते हैं।)

•••

/ Mereramapp

गिलहरी की कहानी

(गिलहरी धीरे-धीरे एक छोटा पत्थर लाती है और बड़े पत्थरों के पास रख देती है। पास में खड़ा एक वानर यह देखता है और हंसने लगता है।)

वानर (हंसते हुए):

अरे गिलहरी! ये तुम क्या कर रही हो? तुम्हारे छोटे-छोटे पत्थर से पुल बनेगा क्या?

गिलहरी (अपनी जगह खड़ी होकर):

मैं अपनी क्षमता के अनुसार मदद कर रही हूं। बड़ा काम हो या छोटा, हर योगदान मायने रखता है।

(बाकी वानर और पक्षी भी गिलहरी पर हंसने लगते हैं। गिलहरी उदास होकर श्री राम के पास चली जाती है।)

गिलहरी (आंखों में आंसू लिए):

प्रभु, मैं पूरी निष्ठा से आपकी मदद करना चाहती हूं, लेकिन वानर मेरी मेहनत का मजाक उड़ा रहे हैं।

श्री राम (मुस्कुराते हुए):

गिलहरी, तुम्हारा समर्पण अमूल्य है। आओ, चलकर सबको यह समझाते हैं।

(श्री राम सबको एकत्र करते हैं और गिलहरी के छोटे-छोटे पत्थरों को दिखाते हैं।)

श्री राम:

देखो, यह छोटे-छोटे पत्थर इन बड़े पत्थरों के बीच की जगह को भरते हैं और पुल को मजबूत बनाते हैं। गिलहरी का योगदान उतना ही महत्वपूर्ण है जितना तुम सबका।

वानर (शर्मिंदा होकर):

प्रभु, हमें अपनी गलती का अहसास हो गया। हमने गिलहरी के समर्पण को समझा नहीं।

श्रीराम (गिलहरी से):

तुमने न केवल मेहनत की है बल्कि सबको यह सिखाया है कि कोई भी योगदान छोटा या बड़ा नहीं होता।

(श्रीराम प्यार से गिलहरी की पीठ पर हाथ फेरते हैं, जिससे उसकी पीठ पर तीन लकीरें उभर आती हैं।)

गिलहरी (खुश होकर):

प्रभु, यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे आपकी सेवा करने का अवसर मिला।

श्री राम:

तुम सब याद रखना, निष्ठा और इरादा किसी भी काम को महान बनाता है।

(सब लोग गिलहरी की भक्ति से प्रेरित होकर उत्साह से काम करने लगते हैं।)

•••

भगवान राम की बहन शांता

वर्षिणी (दुखी स्वर में):

बहन कौशल्या, हमारे राज्य में सब कुछ है – संपत्ति, वैभव, और सम्मान। लेकिन मेरी गोद सूनी है। मुझे कोई संतान नहीं है।

कौशल्या (सहानुभूति से):

दीदी, यह ईश्वर की इच्छा है। लेकिन आपका दर्द मैं समझ सकती हूं।

वर्षिणी (गंभीर स्वर में):

कौशल्या, मैंने एक निर्णय लिया है। मैं तुमसे और महाराज दशरथ से एक निवेदन करना चाहती हूं।

दशरथ (आश्चर्य से):

निवेदन? बताइए दीदी, हम आपकी हर इच्छा पूरी करेंगे।

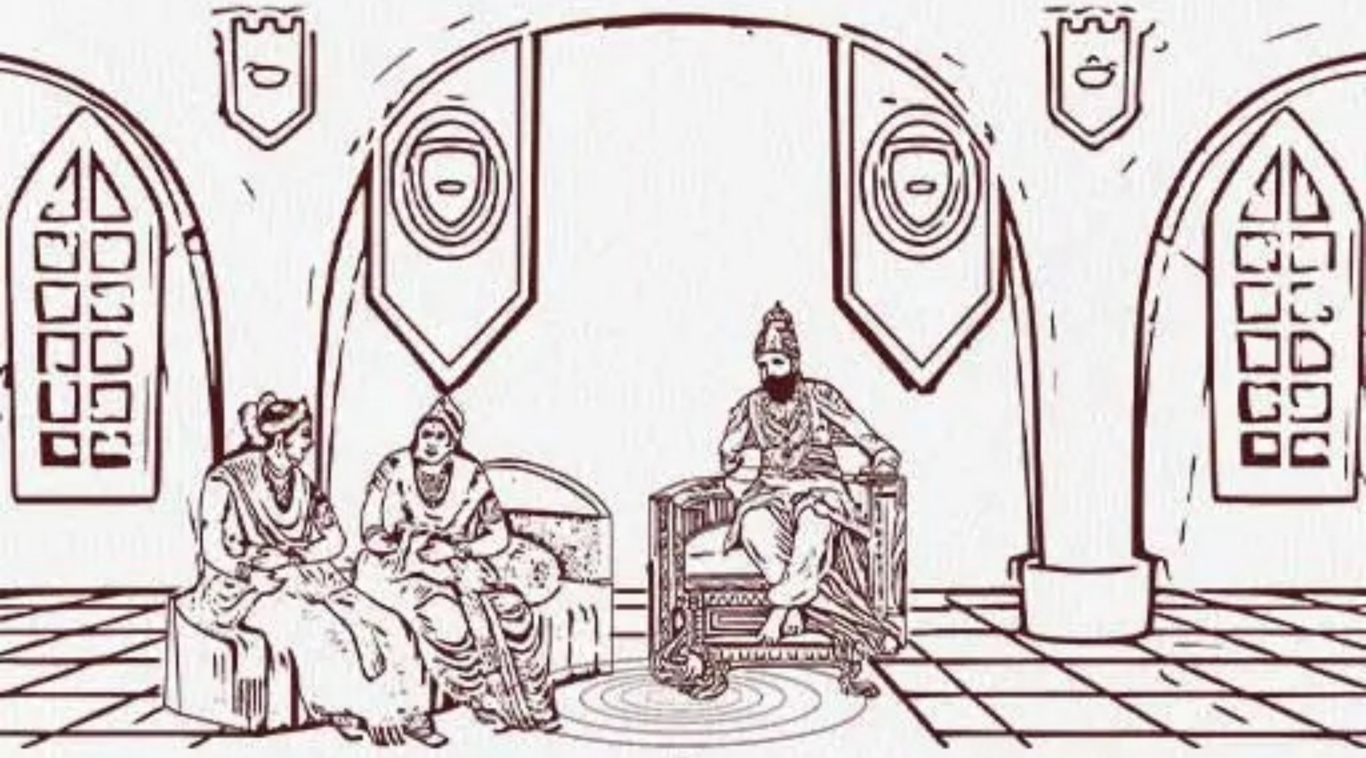

वर्षिणी:

राजन, मैं आपकी बेटी शांता को अपने पास लाना चाहती हूं। मैं उसे अपनी पुत्री के रूप में अपनाना चाहती हूं।

(कौशल्या और दशरथ एक-दूसरे की ओर देखते हैं, उनकी आंखों में भावुकता स्पष्ट है।)

कौशल्या (धीरे से):

लेकिन दीदी, शांता हमारी पहली संतान है। उसे खुद से दूर करने का विचार भी असहनीय है।

वर्षिणी:

बहन, मैं समझती हूं। लेकिन मेरी ममता तड़प रही है। मुझे मातृत्व का अनुभव करने का अवसर दो।

दशरथ (गंभीरता से):

वर्षिणी जी, यह एक कठिन निर्णय है। लेकिन अगर इससे आपकी गोद भर सकती है और शांता को स्नेहपूर्ण वातावरण मिल सकता है, तो मैं सहमत हूं।

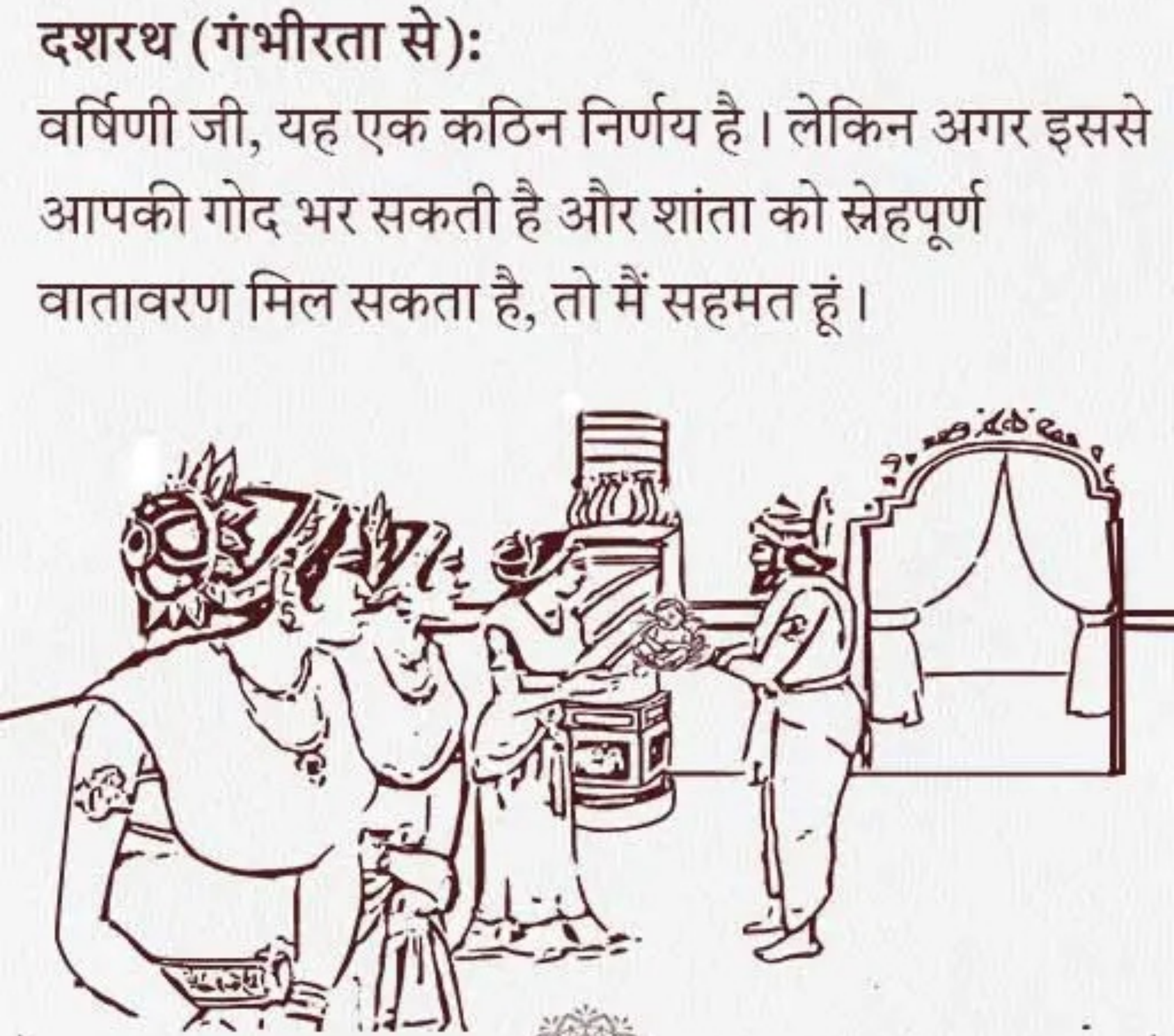

कौशल्या (भरे हुए स्वर में):
अगर यह दीदी की खुशी का कारण बन सकता है, तो मैं भी इसे स्वीकार करती हूं। लेकिन एक वचन दो कि शांता को कभी किसी कमी का एहसास नहीं होगा।
वर्षिणी (भावुक होकर):
मैं वचन देती हूं, बहन। शांता को हमेशा प्यार और स्नेह मिलेगा।
(राजा दशरथ शांता को रानी वर्षिणी को सौंप देते हैं। शांता को सालों तक यह नहीं बताया जाता कि कौशल्या और दशरथ उनके जन्मदाता हैं।)
दशरथ (कौशल्या से):
कौशल्या, देखो, हमारी शांता ने हमारी किस्मत कैसे बदल दी। उसके कारण ही हमारे पुत्रों का जन्म संभव हो सका।
कौशल्या (मुस्कु राते हुए):
हां राजन, शांता हमारी संतान ही नहीं, हमारे लिए वरदान भी है।

•••

/ Mereramapp

हनुमान जी को बजरंगबली क्यों कहा जाता है

हनुमान (जिज्ञासा से):
माता, आप यह सिंदूर अपने माथे पर क्यों लगाती हैं?

सीता माता (मुस्कुराते हुए):
हनुमान, यह सिंदूर मैं श्री राम की लंबी आयु और उनके सुख-शांति के लिए लगाती हूं। यह मेरे प्रेम और समर्पण का प्रतीक है।

हनुमान (सोचते हुए):
यदि सिंदूर श्री राम की आयु बढ़ा सकता है, तो क्यों न मैं पूरे शरीर पर इसे लगा लूं ताकि प्रभु को अधिक आशीर्वाद मिले?

(हनुमान जी तुरंत बहुत सा सिंदूर लाते हैं और पूरे शरीर को नारंगी रंग से लिप्त कर लेते हैं। वह खुशी-खुशी श्री राम के पास पहुंचते हैं।)

हनुमान (उत्साह से):

प्रभु, देखिए! मैंने भी आपके लिए अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगा लिया है। अब आपकी आयु और भी लंबी हो जाएगी।

(श्रीराम यह देखकर जोर से हंस पड़ते हैं और सीता माता भी मुस्कुराने लगती हैं।)

श्री राम (प्रसन्न होकर):

हनुमान, तुम्हारी यह भक्ति और प्रेम अद्वितीय है। तुम्हारे इस कार्य ने मुझे अत्यंत प्रसन्न कर दिया।

(श्रीराम हनुमान जी के सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखते हैं।)

श्री राम:

तुम्हारी इस भक्ति के कारण आज से लोग तुम्हें "बजरंगबली" के नाम से जानेंगे। "बजरंग" का अर्थ है नारंगी, और यह तुम्हारी निष्ठा और समर्पण का प्रतीक बनेगा।

हनुमान (भावुक होकर):

प्रभु, यह नाम मेरे लिए आपका आशीर्वाद है। मेरे जीवन का हर पल आपकी सेवा और भक्ति में ही समर्पित रहेगा।

सीता माता:

हनुमान, तुमने आज यह सिखा दिया कि सच्ची भक्ति न केवल प्रेम है, बल्कि उसमें समर्पण और निष्ठा भी शामिल होती है।

(हनुमान जी खुशी से "जय श्री राम" का जयघोष करते हैं।)

•••

रावण के दस सिर

(रावण अग्नि के सामने बैठा है। वह अपना सिर काटकर यज्ञ में डाल देता है। अचानक उसका सिर वापस जुड़ जाता है। वह बार-बार ऐसा करता है, फिर भी हर बार उसका सिर वापस आ जाता है।)

रावण (तप में लीन होकर):

हे ब्रह्मदेव, जब तक आप प्रकट नहीं होते, मैं अपने शरीर को बार-बार त्यागता रहूंगा।

(कई बार ऐसा करने के बाद ब्रह्मा जी प्रकट होते हैं।)

ब्रह्मा जी (आश्चर्य और प्रसन्नता से):

रावण, तुम्हारी तपस्या और समर्पण ने मुझे प्रभावित किया है। बताओ, तुम्हारी इच्छा क्या है?

/ Mereramapp

रावण (आदरपूर्वक):

प्रभु, मैं सर्वश्रेष्ठ ज्ञानी और अपराजेय बनना चाहता हूं। मुझे ऐसा वरदान दें जिससे मुझे अद्वितीय शक्ति और ज्ञान प्राप्त हो।

ब्रह्मा जी (गंभीरता से):

तुम्हारी तपस्या के फलस्वरूप मैं तुम्हें दस सिर का वरदान देता हूं। ये दस सिर तुम्हारी बुद्धिमत्ता और शक्ति के प्रतीक होंगे।

रावण (आश्चर्यचकित और प्रसन्न होकर):

दस सिर? प्रभु, कृपया मुझे समझाइए, इन दस सिर का क्या अर्थ होगा?

ब्रह्मा जी:

इन दस सिरों में से छह शास्त्रों का प्रतीक हैं और चार वेदों का। ये तुम्हारी अद्वितीय विद्वता और ज्ञान को दर्शाते हैं। लेकिनयाद रखना, इस शक्ति का उपयोग हमेशा धर्म और सच्चाई के लिए करना।

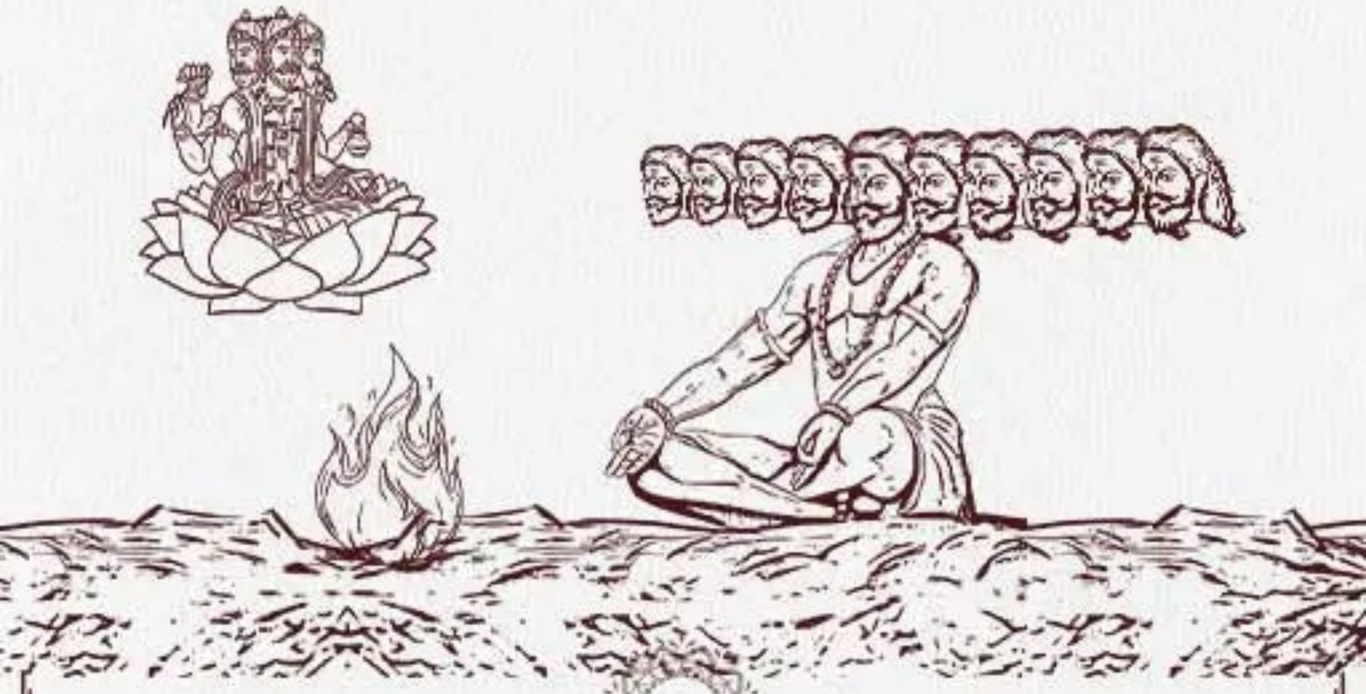

रावण (गर्व से):
प्रभु, मैं आपका आभार प्रकट करता हूं। मैं आपके दिए हुए ज्ञान और शक्ति का उपयोग अपनी महिमा बढ़ाने के लिए करूंगा।

(ब्रह्मा जी रावण को आशीर्वाद देकर अंतर्धान हो जाते हैं।)

(रावण के दस सिर न केवल उसकी शक्ति के प्रतीक बनते हैं, बल्कि यह भी बताते हैं कि ज्ञान और बुद्धिमत्ता के साथ विनम्रता और धर्म का पालन करना आवश्यक है।)

•••

सीता और मंदोदरी की कहानी

मंदोदरी (गुस्से से):

स्वामी, यह क्या कर रहे हैं? निर्दोष ऋषियों का रक्त एकत्रित करना पाप है। आप अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं।

रावण (अहंकार से):

मंदोदरी, यह मेरे शक्ति प्रदर्शन का एक भाग है। ये ऋषि मेरी ताकत के सामने कुछ भी नहीं हैं।

मंदोदरी (क्रोधित होकर):

आपके इस पाप के कारण मैं अब और आपके साथ नहीं रह सकती। यह घड़ा जिसमें आप ऋषियों का रक्त जमा कर रहे हैं, मेरे लिए असहनीय है।

(मंदोदरी रक्त भरे पात्र को देखकर स्वयं को समाप्त करने का निश्चय करती हैं और उसे पी जाती हैं। लेकिन कुछ देर बाद वे चकित हो जाती हैं।)

मंदोदरी (चौंकते हुए):

यह क्या हो रहा है? मैं मरी क्यों नहीं?

(कुछ समय बाद मंदोदरी को पता चलता है कि वे गर्भवती हो गई हैं। रावण को यह सुनकर आश्चर्य होता है।)

रावण (आश्चर्यचकित होकर):

मंदोदरी, यह कैसे संभव है?

मंदोदरी:

यह देवी लक्ष्मी की लीला है। आपके द्वारा मिलाए गए ऋषि गृत्समद के तप से उत्पन्न दूध ने इस रक्त को शुद्ध कर दिया, और अब यह शक्ति का स्रोत बन गया।

(कुछ समय बाद मंदोदरी एक बालिका को जन्म देती हैं। वे समझ जाती हैं कि यह बालिका कोई साधारण नहीं, बल्कि देवी लक्ष्मी का अवतार है।)

मंदोदरी (दुःखी होकर):

यह बालिका पवित्र है। मैं इसे इस अधर्मी महल में नहीं रख सकती।

(मंदोदरी कुरुक्षेत्र जाती हैं और बालिका को वहीं छोड़ देती हैं।)

मंदोदरी (आंसू भरी आंखों से):

हे देवी लक्ष्मी, मुझे क्षमा करें। मैं आपको इस पापमय स्थान में नहीं रख सकती। आप कहीं और जाकर अपनी दिव्यता को प्रकट करें।

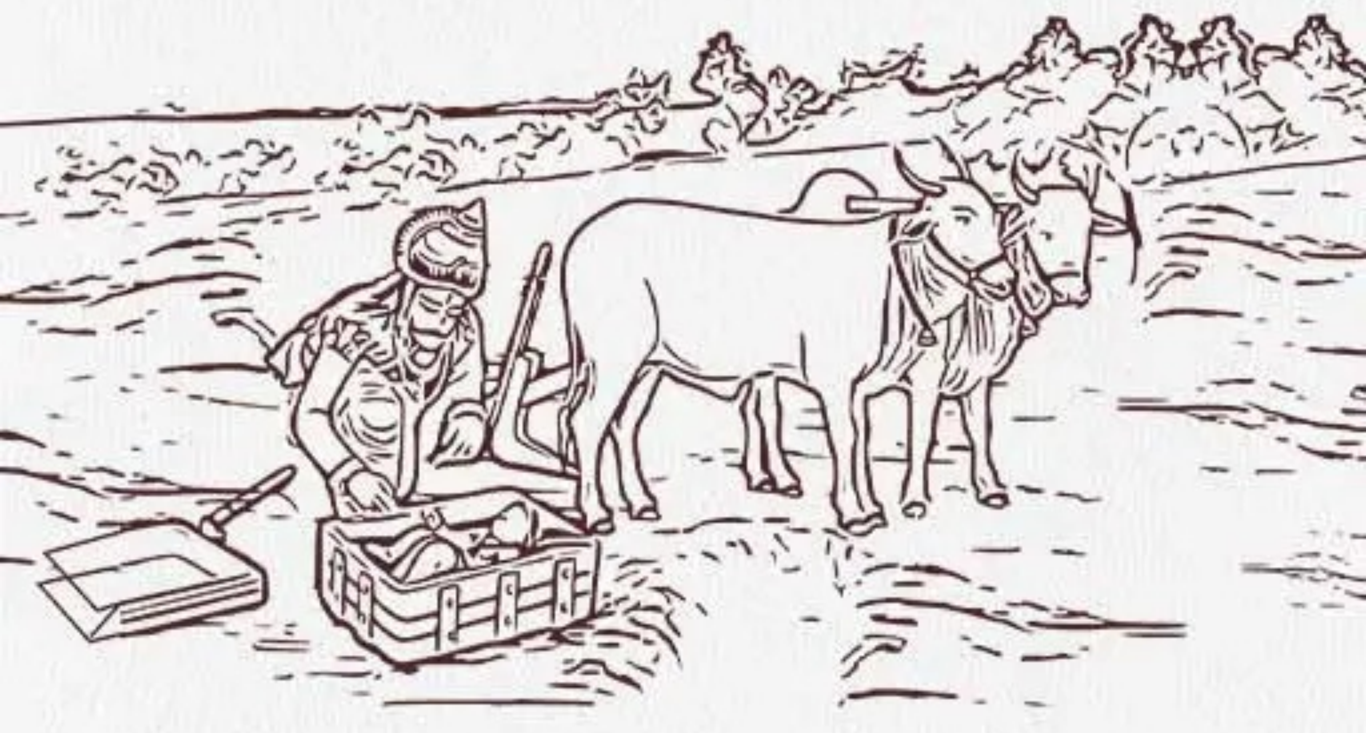

(मंदोदरी बालिका को छोड़कर वापस लौट आती हैं। कुरुक्षेत्र में राजा जनक बालिका को खेत में हल जोतते हुए पाते हैं। वे उसे अपनी पुत्री के रूप में अपनाते हैं और उसका नाम सीता रखते हैं।)

राजा जनक (प्रसन्न होकर):

यह बालिका मेरे जीवन का सबसे बड़ा वरदान है। इसे अब से मेरी पुत्री माना जाएगा।

(सीता का पालन-पोषण मिथिला में होता है, और वे बाद में भगवान राम की पत्नी बनती हैं।)

•••

हनुमान जी का जन्म

राजा दशरथ (यज्ञ करते हुए):

हे देवताओं, मुझे एक ऐसा पुत्र दें जो महान हो, जिससे मेरा नाम रोशन हो।

(अग्नि देव प्रकट होते हैं और राजा दशरथ को प्रसाद देते हैं।)

अग्नि देव (प्रसाद देते हुए):

राजा दशरथ, यह प्रसाद तुम्हें पुत्र रत्न देने वाला है। इसे अपनी रानियों में बांट दो।

राजा दशरथ (प्रसन्न होकर):

धन्यवाद, देवता। मैं इस अपनी तीनों रानियों में बांट दूंगा।

(इसी समय, एक चील आकर प्रसाद के पात्र से थोड़ा सा खीर चुरा लेती है और उसे गिरा देती है।)

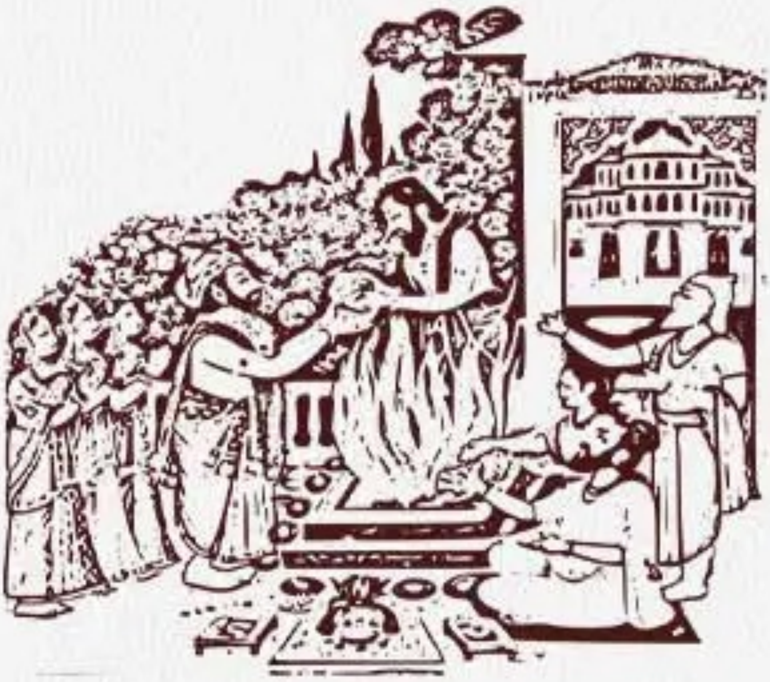

चील (प्रसाद को चुराते हुए):
मुझे यह प्रसाद लेना है, मुझे कुछ शक्तियाँ चाहिए!
(वायु देव वहां पहुंचते हैं और वह गिरा हुआ प्रसाद उठा लेते हैं।)
वायु देव (प्रसाद उठाते हुए):
यह प्रसाद देवी अंजना के पास ले जाना चाहिए। मुझे लगता है कि भगवान शिव की कृपा से उनका सपना पूरा होगा।
(वायु देव प्रसाद को लेकर अंजना माता के पास पहुंचते हैं।)
वायु देव (अंजना माता से):
माँ अंजना, यह भगवान शिव की कृपा से आया हुआ प्रसाद है। इसे ग्रहण करो और यह तुम्हारे पास एक शक्तिशाली पुत्र लाएगा।
अंजना माता (प्रसाद ग्रहण करती हुई):
धन्यवाद, वायु देव! मैं इसे स्वीकार करती हूं।

/ Mereramapp

(कुछ समय बाद, अंजना माता श्री हनुमान जी को जन्म देती हैं।)

अंजना माता (संतोष और खुशी के साथ):

देखो, यह बालक भगवान शिव के आशीर्वाद से जन्मा है। यह अद्भुत शक्तियों से युक्त होगा।

(हनुमान जी का जन्म होते ही आकाश में देवताओं ने आकर आशीर्वाद दिया।)

देवता (आशीर्वाद देते हुए):

यह बालक भगवान राम का परम भक्त बनेगा और संसार में महान कार्य करेगा।

•••

शूर्पणखा की कहानी

शूर्पणखा (श्रीराम से):

हे सुंदर राम, तुम मुझे बहुत आकर्षित लगते हो। क्या तुम मुझसे विवाह करोगे?

श्री राम (मुस्कुराते हुए):

मुझे खेद है, देवी शूर्पणखा, लेकिन मैं पहले से ही सीता से विवाहित हूँ। मुझे विवाह का प्रस्ताव स्वीकार करने का कोई अवसर नहीं है।

(शूर्पणखा को गहरा आघात होता है, लेकिन वह हार मानने वाली नहीं है। वह लक्ष्मण से जाकर वही प्रस्ताव रखती है।)

शूर्पणखा (लक्ष्मण से):

तुम भी राम के जैसे हो, बहुत सुंदर हो। क्या तुम मुझसे विवाह करोगे?

लक्ष्मण (शांत स्वर में):

देवी, श्री राम के साथ मेरा संबंध बहुत गहरा है, और मैं सीता जी का भाई हूँ। मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार नहीं कर सकता।

(अब शूर्पणखा क्रोधित हो जाती है। उसे यह अपमान सहन नहीं होता और वह सीता को नुकसान पहुँचाने की योजन बनाती है।)

शूर्पणखा (गुस्से में):

तुम दोनों मुझे अपमानित कर रहे हो। अब देखो, मैं सीता को नष्ट करके तुम्हें सबक सिखाऊँगी!

(शूर्पणखा जब सीता पर हमला करने के लिए आगे बढ़ती है, तो श्री राम ने लक्ष्मण को आदेश दिया।)

श्री राम (आदेश देते हुए):

लक्ष्मण, इस दुष्ट महिला को रोकों, यह हमारी पत्नी को नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रही है।

(लक्ष्मण तुरंत शूर्पणखा के पास पहुँचते हैं और उसका सामना करते हैं।)

लक्ष्मण (शूर्पणखा से):

तुमने हमारे परिवार पर आक्रमण किया है, अब तुम्हें इसका परिणाम भुगतना होगा।

(लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काट दी, और वह तड़पते हुए जंगल में भाग जाती है।)

शूर्पणखा (दर्द से चीखते हुए):

यह क्या किया तुमने! मेरा अपमान कर दिया! मैं रावण के पास जाऊँगी और इन दोनों का प्रतिशोध लूँगी!

(शूर्पणखा अपमानित होकर अपने भाई रावण के पास पहुँचती है।)

/ Mereramapp

शूर्पणखा (रावण से):

रावण भैया! तुमने देखा, राम और लक्ष्मण ने मुझे अपमानित किया और सीता को भी नुकसान पहुँचाने का प्रयास किया। मुझे बदला लेना है, मुझे उनसे प्रतिशोध चाहिए!

रावण (क्रोधित होकर):

तुमने सही कहा, शूर्पणखा। अगर राम और लक्ष्मण तुम्हारा अपमान कर सकते हैं, तो मैं उनके साथ नहीं बैठ सकता। मैं सीता का अपहरण करूंगा और उनका प्रतिशोध लूंगा।

(शूर्पणखा की बातों से रावण इतना क्रोधित हो जाता है कि वह सीता का अपहरण करने का फैसला करता है, और यही घटना राम और रावण के युद्ध का कारण बन जाती है।)

•••

कुंभकर्ण की नींद का रहस्य

भगवान ब्रह्मा (तीनों भाइयों से):
तुम तीनों मुझसे वरदान मांग सकते हो, जो भी तुम्हारी इच्छा हो, मैं उसे पूरा करूं गा।

रावण (जो पहले वर मांगने के लिए उत्साहित होते हैं):
हे ब्रह्मा! मुझे अमरता का वरदान दो, ताकि मैं किसी को पराजित न कर सकूँ।

विभीषण (संतुलित होकर):
हे ब्रह्मा! मुझे एक ऐसा वरदान चाहिए, जिससे मैं सच्चाई और धर्म के मार्ग पर चल सकूं।

कुंभकर्ण (मौन रहते हुए):
हे ब्रह्मा! मुझे एक ऐसा वरदान चाहिए कि मैं हमेशा सोता रहूं।

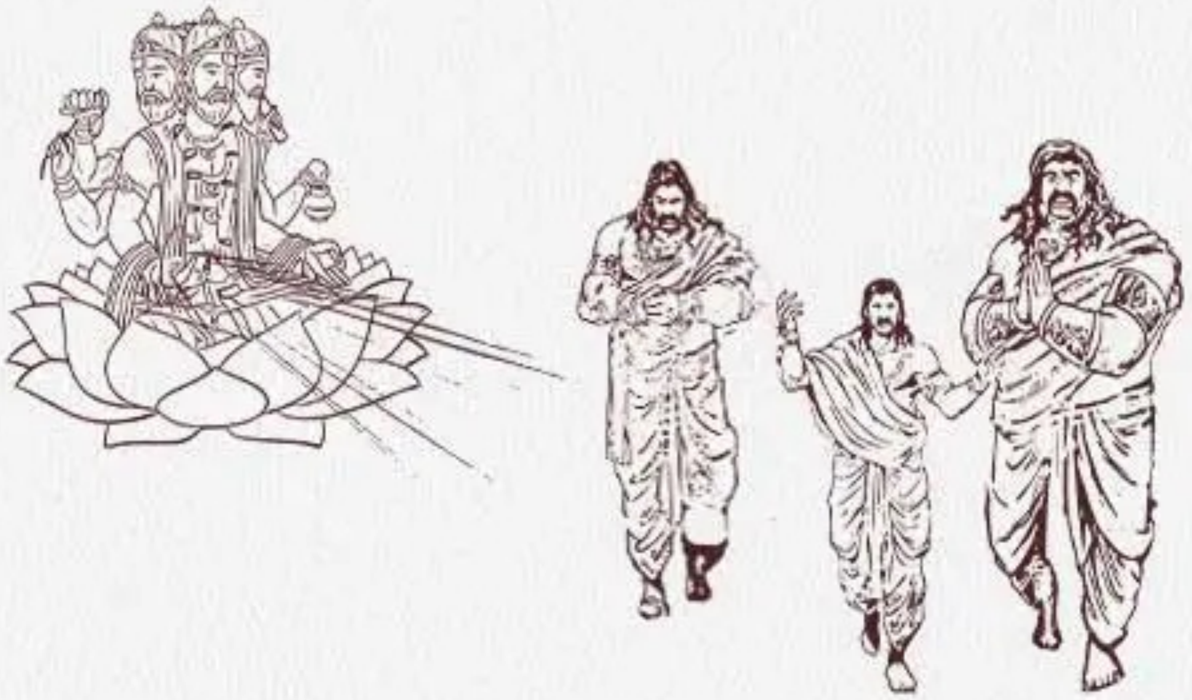

(भगवान ब्रह्मा आश्चर्यचकित होते हैं और इंद्र, जो दृश्य देख रहे होते हैं, वे तुरंत माता सरस्वती से प्रार्थना करते हैं।)

इंद्र (माता सरस्वती से विनती करते हुए):

माता सरस्वती, कृपया कुंभकर्ण के मन की इच्छा को बदलें। उसकी यह इच्छा राक्षसों के लिए बहुत खतरनाक हो सकती है।

माता सरस्वती (इंद्र से):

ध्यान रखना, इंद्र, कि कुंभकर्ण की यह इच्छा पूरी होगी, लेकिन इसके परिणाम उसे ही भुगतने होंगे।

(भगवान ब्रह्मा कुंभकर्ण को वरदान देते हैं।)

भगवान ब्रह्मा (कुंभकर्ण से):

तुमने मुझे हमेशा सोने का वरदान मांगा है, तो मैं तुम्हें यह वरदान देता हूं कि तुम छह महीने सोओगे और छह महीने जागोगे।

/Mereramapp

कुंभकर्ण (खुश होकर):
धन्यवाद, ब्रह्मा!

(रावण यह सब देखता है लेकिन उसे कुंभकर्ण के वरदान का महत्व नहीं समझ आता।)

रावण (सोचते हुए):
मुझे नहीं लगता कि कुंभकर्ण के सोने से कोई फर्क पड़ेगा।

(कुंभकर्ण का वरदान पूरी तरह से काम करता है, और वह छह महीने सोता रहता है। जब श्री राम से यद्धु की बात आती है, तो उसे जगाने के लिए बहुत कोशिशें की जाती हैं।)

रावण (कुंभकर्ण को जगाते हुए):
कुंभकर्ण! युद्ध के लिए उठो! हमारे पास समय नहीं है!

कुंभकर्ण (आँखें मलते हुए, नींद से जागते हुए):
क्या हो रहा है, भाई? यह युद्ध किसलिए है?

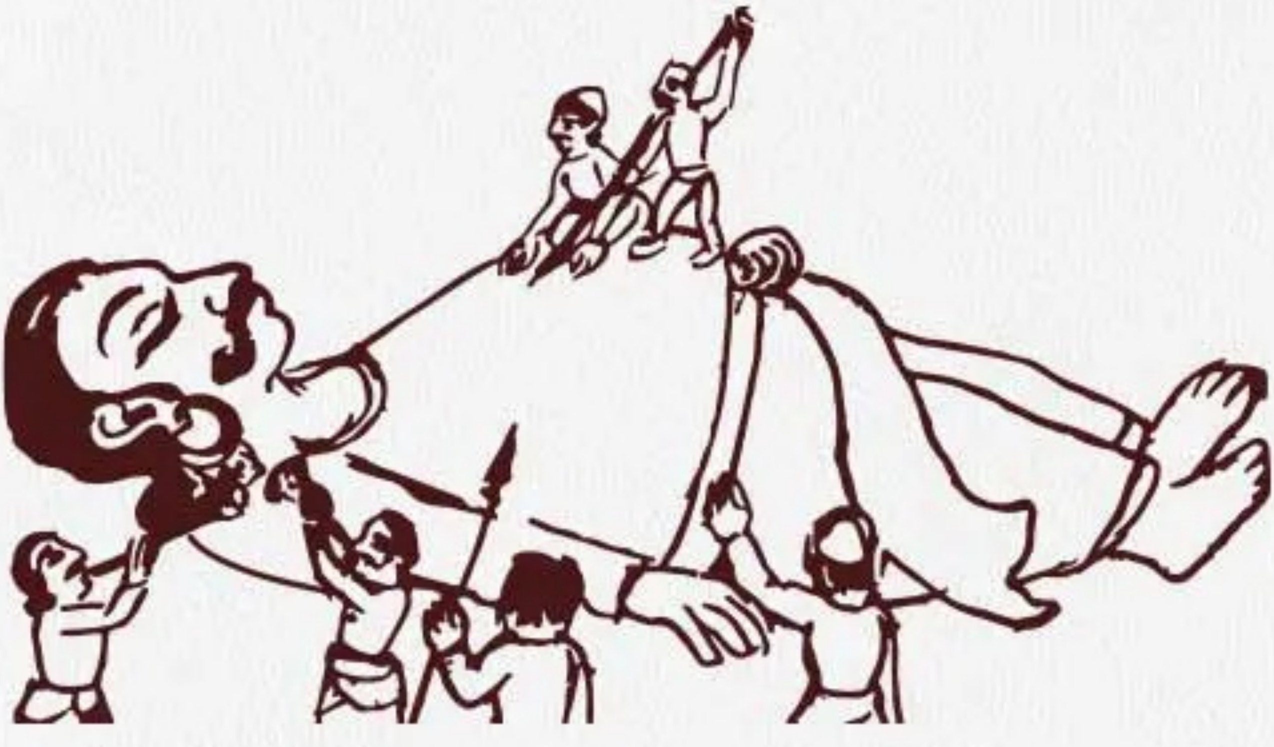

रावण (गुस्से में):

यह युद्ध श्री राम से है! हमे उनसे बदला लेना है!

कुंभकर्ण (सोते हुए, फिर जागते हुए):

ठीक है, भाई! अब जब मैं जाग गया हूं, तो मैं हमारी सेना का नेतृत्व करूंगा और श्रीराम को पराजित करूंगा।

•••

Mere Ram- मेरे राम

SCAN AND GET IT ON
Google Play